

LOGO

Your Coaching Name

LOGO

विषय :- इतिहास

अध्याय- 1. ईर्टि मनके तथा अस्थियाँ (हड्डिया सभ्यता)

Here

**इतिहास:-**

- बीती हुई घटनाओं का काल क्रमानुसार लिखित विवरण इतिहास कहलाता हैं।
- इतिहास के पिता **हेरोडोटस** को कहा जाता है।



**ईस्वी:-** ईसा मसीह के जन्म के बाद के काल को ईस्वी कहा जाता है।



**ईसा पूर्व :-** ईसा मसीह के जन्म के पहले के काल को ईसा पूर्व कहा जाता है।

**शताब्दी :-** 100 वर्षों के समय को शताब्दी कहा जाता है।

**इतिहास का काल विभाजन:-**

- प्रागैतिहासिक काल (आरंभ से 3000 ई० पू०)
- आध ऐतिहासिक काल (3000 ई० पू० से 600 ई० पू०)
- ऐतिहासिक काल (600 ई० पू० से वर्तमान)

**प्रागैतिहासिक काल:-** वह काल जिसका कोई लिखित विवरण उपलब्ध नहीं है, उसे प्रागैतिहासिक काल कहते हैं।



**आध ऐतिहासिक काल:-** वह काल जिसका लिखित विवरण उपलब्ध है लेकिन अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है उसे आध ऐतिहासिक काल कहते हैं।



**ऐतिहासिक काल:-** वह काल जिसका लिखित विवरण उपलब्ध हैं उसे ऐतिहासिक काल कहते हैं।

**इतिहास के अध्ययन के स्रौत**

- साहित्यक स्रौत
- पुरातात्त्विक स्रौत
- विदेशी यात्रियों के विवरण



**(1) साहित्यक स्रौत :-** साहित्यक स्रौतों को भी दो भागों में बाँटा गया है-



- (क) धार्मिक साहित्य  
(ख) लौकिक साहित्य या धर्मेतर साहित्य

**(क) धार्मिक साहित्य:** धार्मिक साहित्य पुनः चार वर्गों में बाँटा गया है-

(अ) ब्राह्मण साहित्य

(ब) बौद्ध साहित्य

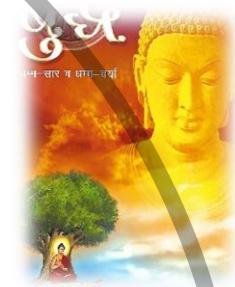
(स) जैन साहित्य

(द) महाकाव्य |

**(अ) ब्राह्मण साहित्य:-** ब्राह्मण साहित्य के अंतर्गत चार वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, अरण्यक, उपनिषद्, वेदांग, स्मृति साहित्य एवं पुराण इत्यादि आते हैं। इनसे हमें प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

**(ब) बौद्ध साहित्य:-** बौद्ध साहित्य के

अंतर्गत त्रिपिटक, जातक कथायें, दीपवंश एवं महावंश, मिलिन्दपन्हों एवं अंगुत्तर निकाय आदि आते हैं। इनसे हमें प्राचीन भारतीय इतिहास विशेषकर बुद्ध कालीन समाज, राजनीति एवं धार्मिक स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।



**(स) जैन साहित्य:-** जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है।

जिसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण एवं 14 पर्व आते हैं। अन्य प्रमुख जैन साहित्य में परिशिष्ट पर्व, भद्रवाहू चरित, आवश्यक सूत्र, आचारांग सूत्र, हरिवंश पुराण, कल्पसूत्र आदि आते हैं। इनसे हमें प्राचीन भारतीय इतिहास विशेषकर महावीर स्वामी कालीन समाज एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है।



**(द) महाकाव्य:-** प्राचीन भारतीय

इतिहास की जानकारी के दो अन्य प्रमुख ग्रन्थ महाकाव्य-रामायण एवं महाभारत हैं। इनसे भी हमें तत्युगीन राजनीति, समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।



**(ख) लौकिक साहित्य या धर्मेतर साहित्य:-** लौकिक साहित्य

के अंतर्गत ऐतिहासिक, अर्द्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ एवं जीवनियों को लिया जाता है।

**(i) ऐतिहासिक ग्रन्थ:- कौटिल्य**

(चाणक्य) द्वारा रचित ‘अर्थशास्त्र’ मौर्यकालीन राजनितिक इतिहास की जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इसी प्रकार कल्हण द्वारा रचित राजतंगिणी कश्मीर के इतिहास की जानकारी का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

**(ii) अर्द्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ:-**

**मुद्राराक्षस:-** विशाखदत्त कृत ‘मुद्राराक्षस’ चाणक्य की कूटनीति द्वारा नन्द वंश की समाप्ति एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यारोहण पर प्रकाश डालता है।

**अष्टाध्यायी:-** पाणिनी कृत ‘अष्टाध्यायी’ मौर्य पूर्व एवं मौर्ययुगीन राजनीति पर प्रकाश डालता है।

**मालविकाग्रिमित्र:-** कालिदास कृत ‘मालविकाग्रिमित्र’ भी शुंगकालीन इतिहास की जानकारी प्रदान करता है।

**महाभाष्य:-** पतंजलि, शुंग सम्राट पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे, इनके ग्रन्थ ‘महाभाष्य’ से हमें शुंगकालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।

**(iii) जीवनी ग्रन्थ:-**

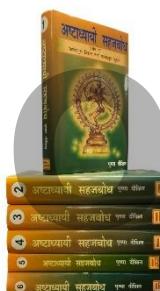
-अश्वघोष कृत ‘बुद्धचरित’ गौतम बुद्ध के चरित्र पर प्रकाश डालता है।

-बाणभट्ट कृत ‘हर्षचरित’ सम्राट हर्षवर्धन के जीवन पर प्रकाश डालता है।

-विल्हण कृत ‘विक्रमांकदेवचरित’ कल्याणी के चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य षष्ठ का विवरण प्रस्तुत करता है।

-जयानक कृत ‘पृथ्वीराज विजय’ एवं चन्द्रवरदायी कृत ‘पृथ्वीराज राजों’ चौहान सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के जीवन एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हैं।

**(2) पुरातात्त्विक स्रोत:-** प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के प्रमाणिक एवं विश्वसनीय स्रोत पुरातात्त्विक स्रोत माने जाते हैं।



पुरातात्त्विक स्रोतों के तहत-शिलालेख, अभिलेख, गुहालेख, मुद्रायें, स्मारक, मूर्तियाँ एवं चित्रकला आदि आते हैं।

**(3) विदेशी यात्रियों के विवरण:-** प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने के धर्मनिरपेक्ष साहित्यिक स्रोतों में विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तातों का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

**हड्डिया सभ्यता**

- हड्डिया सभ्यता में सबसे पहले हड्डिया नामक स्थान का खोज हुआ था। इसी के नाम पर इस सभ्यता का नाम हड्डिया सभ्यता पड़ा।
- हड्डिया सभ्यता सिंधु नदी घाटी क्षेत्र में फैला हुआ है। इसलिए हड्डिया सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता भी कहते हैं।
- हड्डिया सभ्यता नगरीय सभ्यता थी।
- हड्डिया सभ्यता कास्ययुगीन सभ्यता था।
- हड्डिया सभ्यता का काल 2600 से 1900 ईसा पूर्व के बीच निर्धारित किया गया है।



**आरंभिक हड्डिया:-** हड्डिया सभ्यता से पहले के काल को आरंभिक हड्डिया कहा जाता है।

**परवर्ती हड्डिया :-** हड्डिया सभ्यता के बाद के काल को परवर्ती हड्डिया कहा जाता है।

**हड्डिया सभ्यता के समकालीन सभ्यताओं:-**

- ✓ मिस्र की सभ्यता
- ✓ मेसोपोटामिया की सभ्यता
- ✓ ईरान की सभ्यता
- ✓ चीन की सभ्यता

**हड्डिया सभ्यता के जानकारी के स्रोत :-**

- ❖ आवास
- ❖ मृदभांडो
- ❖ आभूषण
- ❖ औजारों
- ❖ मुहर

**हड्डिया सभ्यता के प्रमुख स्थल:-**

- हड्पा (पंजाब, पाकिस्तान)
- मोहनजोदड़ो (सिंध, पाकिस्तान)
- चन्हूदड़ो (सिंध, पाकिस्तान)
- सुल्कागड़ोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान)
- कोटदीजी (सिंध, पाकिस्तान)
- रंगपुर (गुजरात)
- कालीबंगान (राजस्थान)
- सुरकोटड़ा (गुजरात)
- रोपड़ (पंजाब)
- लोथल (गुजरात)
- धौलावीरा (गुजरात)
- राखीगढ़ी (हरियाणा)
- बनवाली (हरियाणा)
- हड्पा और मोहन हड्पा सभ्यता का दो प्रमुख नगर था।
- हड्पा और मोहनजोड़ो को हड्पा सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा जाता है।

**पुरातत्व:-** वह विज्ञान जिसके

माध्यम से पृथकी के गर्भ में छिपी हुई सामग्री की खुदाई कर अतीत के लोगों को भौतिक जीवन का ज्ञान प्राप्त किया जाता है उसे पुरातत्व कहते हैं।

**पुराविद्:-** विभिन्न स्थानों पर उत्खनन कर पुरातात्विक सामग्री की खोज करने वाले विद्वान् पुरातत्ववेता या पुराविद् कहलाते हैं।

**अभिलेख:-** पत्थर या धातु पर लिखे गए लेख को अभिलेख कहते हैं।

**उत्खनन :-** धरातल से खुदाई करके पुरातात्विक सामग्री प्राप्त करना ‘उत्खनन’ कहलाता है।

**कार्बन 14 विधि :-** तिथि निर्धारण की वैज्ञानिक विधि को कार्बन 14 विधि कहा जाता है। जिस पदार्थ में कार्बन 14 की मात्रा जितनी कम होती है वह उतना प्राचीन माना जाता है।

### ➤ संस्कृति:-

पुरातत्वविद् संस्कृति शब्द का प्रयोग पूरावस्तुओं के ऐसे समूह के लिए करते हैं जो एक विशिष्ट शैली के होते



हैं और सामान्यत एक साथ, एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र तथा कालखंड से संबद्ध पाए जाते हैं।

### हड्पा सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- पूर्व - आलमगीरपुर (मेरठ)
- पश्चिम - सुल्कांगेडोर (बलूचिस्तान)
- उत्तर - मांडा (जम्मू कश्मीर)
- दक्षिण - दैमाबाद (महाराष्ट्र)

### हड्पा:-

- हड्पा सभ्यता का सबसे पहले खोजा जाने वाला स्थल हड्पा था।
- हड्पा पाकिस्तान के पंजाब के माण्टगोमरी जिला में स्थित है।
- हड्पा का खोज **1921** ईस्वी में दयाराम साहनी ने की।
- हड्पा रावी नदी के तट पर है।
- हड्पा से तांबे की इक्का गाड़ी, उर्वरता की देवी, कांस्य दर्पण, मछुआरे का चित्र, गुरुड़ की मूर्ति, अबलोकितेश की मूर्ति साक्ष्य के रूप में मिले हैं।

### मोहनजोदड़ो:-

- मोहनजोदड़ो सिंधी भाषा का शब्द है।
- मोहनजोदड़ो का अर्थ होता है मृतकों का टीला।
- मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध नदी प्रांत के लरकाना जिला में स्थित है।
- मोहनजोदड़ो सिंध नदी के किनारे स्थित है।
- मोहनजोदड़ो का खोज **1922** ईस्वी में राखालदास बनर्जी ने किया था।
- ❖ मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्नागार संभवतः सिन्धु सभ्यता या सैंध्व सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।



- ❖ मोहनजोदड़ो से प्राप्त वृहत् स्नानगार एक प्रमुख स्मारक है, जिसके मध्य स्थित स्नानकुंड 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा एवं 2.43 मीटर गहरा है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक शील पर तीन मुख वाले देवता (पशुपति नाथ) की मूर्ति मिली है। उनके चारों ओर हाथी, गैंडा, चीता एवं भैंसा विराजमान हैं।
- मोहनजोदड़ो से नर्तकी की एक कांस्य मूर्ति मिली है।
- मोहनजोदड़ो में शवों को जलाने की प्रथा थी।

#### कालीबंगन:-

- कालीबंगन की खुदाई 1953 ई. में बी. बी. लाल एवं बी. के. थापर के द्वारा करवाया गया था।
- यह स्थल राजस्थान का हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के तट पर बसा है।
- कालीबंगन का अर्थ है काले रंग की चूड़ियाँ।
- कालीबंगन एक मात्र हड्ड्याकालीन स्थल था, जिसका निचला शहर (सामान्य लोगों के रहने हेतु) भी किले से धिरा हुआ था।
- कालीबंगन से पूर्व हड्ड्या स्तरों के खेत जोते जाने के और अग्निपूजा की प्रथा के प्रमाण मिले हैं।
- कालीबंगन से जुते हुए खेल और नक्काशीदार ईंटों के प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से अग्निकुण्ड भी प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगन से सैंधवकालीन घोड़े के अस्थिपंजर मिले हैं।

#### चन्हूदड़ो:-

- चन्हूदड़ो की खोज गोपाल मजुमदार द्वारा 1931 ई. में की गयी थी।
- यह स्थल सिंध प्रान्त (पाकिस्तान) में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है।
- यह एक मात्र स्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें प्राप्त हुई हैं।



- ✓ बिल्ली का पीछा करते कुत्ते का साक्ष्य मिला है।
- ✓ सजने-सवरने के लिये लिपस्टिक का प्रयोग किया जाता था।
- ✓ चन्हूदड़ो में मनके बनाने के कारखाना मिले हैं।

#### कोटदीजी:-

- ✓ इसकी खुदाई वर्ष 1955 में फजल अहमद के द्वारा करवाई गयी थी।
- ✓ यह सिंध प्रान्त का खैरपुर स्थान में सिन्धु नदी तट पर स्थित है।
- ✓ यहाँ से चाँदी के सर्वप्रथम प्रयोग के साक्ष्य मिले हैं।



#### रंगपुर:-

- ❖ रंगपुर की खुदाई रंगनाथ राव द्वारा 1953-56 ई. में करवाई गयी थी।
- ❖ यह गुजरात का काठियावाड़ जिला में मादर नदी तट पर स्थित है।
- ❖ यहाँ से कच्ची ईंटों से बना दुर्ग मिला है।
- ❖ रंगपुर से चावल के दाने मिले हैं, जिनसे धान की खेती होने का प्रमाण मिलता है।



#### रोपड़:-

- ✓ इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा द्वारा 1953-56 ई. में करवाई गयी थी।
- ✓ यह स्थल पंजाब का रोपड़ जिला में सतलज नदी के तट पर स्थित है।
- ✓ यहाँ से ताँबे की कुलहाड़ी, आदमी और कुत्ते की एक कब्रगाह आदि के साक्ष्य मिले हैं।



#### लोथल:-

- लोथल की खोज रंगनाथ राव द्वारा 1955 एवं 1962 ई. में की गयी थी।
- यह स्थल गुजरात का अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के तट पर स्थित है।
- लोथल सिन्धु सभ्यता का बन्दरगाह था।



- लोथल से चावल के दाने मिले हैं, जिनसे धान की खेती होने का प्रमाण मिलता है।
- चावल के प्रथम साक्ष्य लोथल से ही प्राप्त हुए हैं।
- लोथल से मनके बनाने के कारबाहने मिले हैं।
- लोथल नगर के घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर खुलते थे।
- यहां पर युग्म समाधियाँ मिली हैं।

#### आलमगीरपुर:-

- इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा द्वारा वर्ष 1958 में करवाई गयी थी।
- यह स्थल उत्तर प्रदेश का मेरठ जिले में हित्तन नदी के तट पर स्थित है।

#### सुतकांगेडोर:-

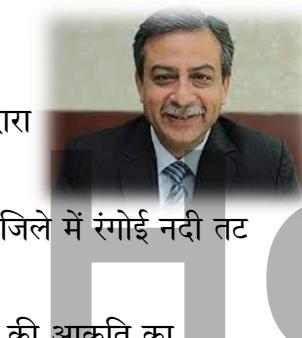
- इसकी खुदाई औरेज स्टाइल द्वारा 1927 में तथा जार्ज डेल्स द्वारा 1962 में करवाई गयी थी।
- यह स्थल पाकिस्तान में दाशक नदी के तट पर स्थित है।
- यहां से मिट्टी की बनी चूड़ियाँ, राख से भरा बर्तन, ताम्बे की कुल्हाड़ी, मनुष्य की हड्डियाँ इत्यादि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

#### बनवाली:-

- इसकी खोज रवींद्र सिंह विष्ट द्वारा 1974 ई. में की गयी थी।
- यह स्थल हरियाणा का हिसार जिले में रंगोई नदी तट पर स्थित है।
- यहां से ताँबे का कुल्हाड़ी, हल की आकृति का खिलौना, पत्थर व ईंट के मकान, उन्नत किस्म की जौ, सड़कों पर बैलगाड़ी के निशान आदि के साक्ष्य मिले हैं।

#### सुरकोतदा:-

- ✓ इसकी खुदाई जगपति जोशी द्वारा 1964 ई. में करवाई गयी थी।
- ✓ यह स्थल गुजरात राज्य के कच्छ नामक जगह पर स्थित है।



- ✓ सुरकोतदा सिन्धु सभ्यता का बंदरगाह था।
- ✓ यहाँ से सैंधवकालीन घोड़े के अस्थिपंजर प्राप्त हुए हैं।

#### धौलावीरा:-

- ❖ इसकी खोज में जगपति जोशी द्वारा 1967 ई. में की गयी थी, परन्तु इसकी व्यापक खुदाई रविंद्र सिंह विष्ट द्वारा 1990-91 ई. में करताई गयी थी।
- ❖ यह स्थल गुजरात राज्य के कच्छ जिले में मानहर एवं मानसर नदी के बीच स्थित है।
- ❖ यहां से जल निकासी प्रबंधन, जल कुंड इत्यादि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

#### राखीगढ़ी:-

- इसकी खुदाई अमरेंद्र नाथ द्वारा वर्ष 1997 करवाई गयी थी।
- यह स्थल हरियाणा राज्य के हिसार जिले में सरस्वती तथा दुहद्वती नदियों के पास स्थित है।
- धौलावीरा के बाद राखीगढ़ी भारत में स्थित सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है।

#### जीवन निर्वाह के तरीके:-

- हड्पा सभ्यता के निवासी पेड़ पौधे से प्राप्त उत्पाद, जानवर, मछली से भोजन प्राप्त करते थे।
- हड्पा स्थल से गेहूं बाजरा दाल, चावल, सफेद चना, तिल इत्यादि के साक्ष्य मिले हैं।
- हड्पा स्थल से भेड़, बकरी, भैंस, सूअर हिरण और घड़ियाल की हड्डियाँ मिली हैं।

#### कृषि प्रौद्योगिकी:-

- हड्पा के चोलीस्तान (पाकिस्तान) और बनावली (हरियाणा) से मिट्टी के हल के प्रतिरूप मिले हैं।
- कालीबंगा से जोते हुए खेत का साक्ष्य मिला है।
- हड्पा सभ्यता के मुहर पर भी वृषभ का चित्र मिला है इससे यह स्पष्ट होता है कि खेत जोतने के लिए हड्पावासी बैल का प्रयोग करते थे।



- फसल की कटाई के लिए हड्पा के लोग लकड़ी के हाथों में बैठाया गए पथर के फलकों, धातु के औजारों का प्रयोग करते थे।
- सिंचाई के लिए कुआं, नहर तथा जलाशय का प्रयोग करते थे। धौलावीरा से जलाशय और नहर का अवशेष मिले हैं।

#### बस्ती:-

- (i). दुर्ग :- दुर्ग आकार में छोटा था। इसे ऊंचाई पर बनाया गया था। दुर्ग के चारों तरफ दीवार से घेरा गया था। यह दिवार इसे निचले शहर से अलग करता था।
- (ii). निचला शहर:- निचला शहर का आकार में दुर्ग से बड़ा था। यह सामान्य लोगों के लिए बनाया गया था।



#### गृह स्थापत्य कला:-

- मोहनजोदड़ो के आवासीय भवन में एक आंगन होता था जिसके चारों ओर कमरे बने होते थे।
- मकान के दीवारों में खिड़कियां नहीं होती थी।
- मुख्य द्वार से आगन सीधा दिखाई नहीं देता था।
- हर घर में एक स्नानघर होता था जिसकी नाली सड़क के मुख्य नाली से मिली होती थी।
- कुछ घर में बहु मंजिला मकान भी मिले हैं।
- हर घर में एक कुआं बनाया जाता था।
- मोहनजोदड़ो में कुआं की कुल संख्या 700 थी।



**माल गोदाम:-** एक बड़े आकार का गोदाम था जिसमें अनाज को रखा जाता था।



#### विशाल स्नानघर:-

दुर्ग पर बड़े-बड़े स्नानघर के अवशेष मिले हैं।

स्नानघर का आकार 12 मीटर लंबा

7 मीटर चौड़ा और लगभग 2.4

मीटर गहरा था। इसके चारों ओर बरामदे होते थे। स्नानघर को भरने के लिए कुआं का प्रबंध था इसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठान के लिए या विशेष अवसर पर नहाने के लिए किया जाता था।



#### जल निकास प्रणाली:-

- ❖ हड्पा सभ्यता की गालियों एवं सड़कों को को ग्रीड पद्धति में बनाया गया था।
- ❖ यहां सड़के के एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।
- ❖ हड्पा सभ्यता के हर घर में नाली का निर्माण किया गया था। घर का नाली मुख्य सड़क के नाली से मिलता था।
- ❖ नाली ईट से ढका जाता था कूड़ा करकट से बचाया जा सके।



#### हड्पाई क्षेत्रों में परिवहन के साधन:-

(i) बैलगाड़ियों के मिट्टी से बने खिलौनों के प्रतिरूप संकेत करते हैं कि लोगों तथा सामान के लिए स्थल मार्ग परिवहन के महत्वपूर्ण साधन थे।

(ii) सिंधु तथा इसकी उपनदियों के बगल में बने नदी मार्गों और साथ ही तटीय मार्गों का भी प्रयोग परिवहन के लिए करते थे।

#### हड्पा का शवाधन:-

- ❖ हड्पा स्थलों में मृतकों को गर्तों में दफनाया जाता था।
- ❖ हड्पा सभ्यता के क्रत्रों से मृदभाष्ट तथा आभूषण मिले हैं।
- ❖ पुरुषों और महिलाओं, दोनों के शवाधानों से आभूषण मिले हैं।
- ❖ 1980 के दशक के मध्य में हड्पा के कब्रिस्तान में हुए उत्खननों में एक पुरुष की खोपड़ी के समीप शंख के



तीन छल्लों, जैस्पर (एक प्रकार का उपरक) के मनके तथा सैकड़ों की संख्या में सूक्ष्म मनकों से बना एक आभूषण मिला था।

- ❖ कहीं-कहीं पर मृतकों को ताँबे के दर्पणों के साथ दफनाया गया था।
- ❖ हड्पा सभ्यता के निवासियों का मृतकों के साथ बहुमूल्य वस्तुएँ दफनाने में विश्वास नहीं था।

#### शिल्प-उत्पादन:-

- चन्हुदड़ो शिल्प-उत्पादन में संलग्न थी।
- शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातुकर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना सम्मिलित थे।
- मनकों के निर्माण में कार्नीलियन (सुंदर लाल रंग का), जैस्पर, स्फटिक, कवार्टज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर, ताँबा, काँसा तथा सोने जैसी धातुएँ, तथा शंख, फयॉन्स और पकी मिट्टी, सभी का प्रयोग होता था।
- मनकों के कई आकार होते थे। जैसे - चक्राकार, बेलनाकार, गोलाकार, ढोलाकार तथा खंडित।
- मनकों को उत्कीर्णन तथा चित्रकारी के माध्यम से सजाया जाता था।
- चन्हुदड़ो, लोथल और हाल ही में धौलावीरा से मनकों में छेद करने के विशेष उपकरण मिले हैं।
- नागेश्वर तथा बालाकोट जो समुद्र तट के समीप स्थित है, शंख से बनी वस्तुओं जिनमें चूड़ियां, करछियाँ तथा पच्चीकारी की वस्तुएँ सम्मिलित हैं, के निर्माण के विशिष्ट केंद्र थे।
- चन्हुदड़ो और लोथल से तैयार माल (जैसे:- मनके) मोहनजोदड़ो और हड्पा जैसे बड़े शहरी केंद्रों तक लाया जाता था।



#### शिल्प उत्पादन हेतु माल:-

- नागेश्वर और बालाकोट में शंख मिलता था।



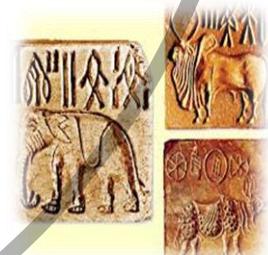
- अफगानिस्तान में शातुर्धई में नीले रंग के पत्थर पत्थर लाजवर्द मणि मिलता था।
- राजस्थान के खेतड़ी अँचल से तांबे की पत्थर तथा दक्षिणी भारत क्षेत्र से सोना मंगवाया जाता था।

#### हड्पा वासियों का सुदूर देशों से संपर्क:-

- अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी-पूर्वी छोर पर स्थित ओमान से हड्पावासियों का व्यापारिक संपर्क था।
- मेसोपोटामिया के स्थलों से प्राप्त ताँबे तथा हड्पाई पुरावस्तुओं दोनों में निकल के अंश मिलते हैं।
- मेसोपोटामिया से हड्पाई मुहरें, बाट, पासे और मनके प्राप्त हुए हैं।
- मेसोपोटामिया से प्राप्त लेख से दिलमुन, मगान तथा मेलुहा नामक हड्पाई क्षेत्रों से संपर्क की जानकारी मिलती है। मेसोपोटामिया के लेख में मेलुहा को "नाविकों का देश" कहा गया है।
- मेसोपोटामिया से प्राप्त एक विशिष्ट बेलनाकर मुहर पर कूबड़ीर वृषभ का चित्र प्राप्त हुआ है जो संभवतः सिंधुक्षेत्र से लिया गया प्रतीत होता है।
- बहरीन में मिली गोलाकार फारस की खाड़ी प्रकार की मुहर पर भी कभी-कभी हड्पाई चित्र मिलते हैं। दिलमुन के स्थानीय बाट हड्पाई मानक का अनुसरण करते थे।

#### मुहर:-

- मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लंबी दूरी के संपर्कों को सुविधाजनक बनाने के लिए होता था तथा मुद्रांकन से प्रेषक की पहचान का भी पता चलता था।



#### हड्पाई लिपि:-

- एक रहस्यमय लिपि थी, यह
- लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है।
- हड्पाई लिपि में चिह्नों की संख्या
- लगभग 375 से 400 के बीच चिह्न था।
- यह लिपि दाईं से बाईं और लिखी जाती थी।



**बाट:-**

- ❖ हड्डपाई क्षेत्रों में विनिमय बाटों की एक सूक्ष्म या परिशुद्ध प्रणाली द्वारा नियंत्रित थे।
- ❖ बाट सामान्यत चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे।
- ❖ बाट घनाकार आकृति के होते थे।
- ❖ बाटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32) इत्यादि 12,800 तक) तथा ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणालीका अनुसरण करते थे।
- ❖ छोटे बाटों का प्रयोग संभवत आभूषण और मनकों को तोलने के लिए किया जाता था।

**'विलासिता' की वस्तुओं का खोज:-**

- i. **रोजमरा के उपयोग की वस्तुएँ:** - वे वस्तुएँ जिन्हें पत्थर अथवा मिट्टी जैसे सामान्य पदार्थों से आसानी से बनाया जा सकता है, जो वस्तुएँ सामान्य रूप से बस्तियों में सर्वत्र पाई जाती थी। उसे रोजमरा के उपयोग की वस्तुएँ कहते हैं।  
जैसे:- चक्रियाँ, मृदभाण्ड, सूझायाँ, आदि
- ii. **विलासिता की वस्तुएँ:** - वे वस्तुओं जो कीमती हो, जो दुर्लभ अथवा मँहगी हों, स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध पदार्थों से अथवा जटिल तकनीकों से बनी हों। उसे विलासिता की वस्तुएँ कहते थे।
- iii. **मँहगे पदार्थों से बनी दुर्लभ वस्तुएँ:** - सामान्यत मोहनजोदड़ो और हड्डपा जैसी बड़ी बस्तियों में केंद्रित पाई गई हैं और छोटी बस्तियों में ये विरले ही मिलती हैं।

**उदाहरण :-** सोना, फ्लॉन्

**➤ हड्डपा सभ्यता का सामाजिक जीवन:-**

1. हड्डपा सभ्यता के लोग शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते थे।
2. खुदाई से प्राप्त सुझियों के अवशेष संकेत देते हैं कि ये लोग सिले वस्त्र पहनते थे।
3. केश विन्यास प्रचलित था। स्त्रियाँ जूड़ा बाँधती थीं तथा पुरुष लम्बे-लम्बे बाल तथा दाढ़ी-मूँछ रखते थे।

4. इस सभ्यता के लोग आभूषणों के शौकीन थे। विविध प्रकार के आभूषण-कण्ठहार, कर्णफूल, हँसुली, भुजबंध, कड़ा, अंगूठी, करधनी आदि पहने जाते थे।

5. श्रृंगार प्रसाधन के भी हड्डपावासी शौकीन थे। मोहनजोदड़ो की नारियाँ काजल, पाउडर आदि से परिचित थीं। शीशे, कंघे एवं ताँबे के दर्पण का प्रयोग होता था। चन्हूदड़ो से लिपस्टिक के अस्तित्व का भी संकेत मिलता है।
6. इनके आभूषण बहुमूल्य पत्थरों, हाथी दाँत, हड्डी एवं शंख आदि के बनते थे।

7. मिट्टी एवं धातुओं से निर्मित तरह-तरह के बर्तनों का प्रयोग करते थे। फर्श पर बैठने के लिए चटाइयों के साथ-साथ पलंग व चारपाई से भी परिचित थे।
8. सैंधव निवासी आमोद-प्रमोद के प्रेमी थे, पाँसा इस काल का प्रमुख खेल था।
9. सिन्धु घाटी में बहुत सारे खिलौने मिले हैं जो बहुत ही कौतूहलजनक हैं। एक बैल रूपी खिलौना सिर हिलाता है। एक हाथी मिला है जिसका सिर दबाने से ध्वनि उत्पन्न होती है।
10. यहाँ प्राप्त नर्तकी की मूर्ति से संकेत मिलता है कि नृत्य भी मनोरंजन का प्रिय साधन रहा होगा। गाने-बजाने के भी ये शौकीन थे।

**❖ हड्डपा सभ्यता का धार्मिक जीवन****1. मातृदेवी की मूर्ति :-**

आभूषणों से लदी हुई नारी की मृणमूर्तियाँ जिनमें कुछ के शीर्ष पर विस्तृत प्रसाधन थे, उन्हें मातृदेवियों की संज्ञा दी गई



थी। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हड्डपा सभ्यता के लोग मातृदेवी की पूजा करते थे।

2. **आनुष्ठानिक महत्व :-** हड्डपा में अनेक संरचनाओं - जैसे विशाल स्थानागार को आनुष्ठानिक महत्व का माना गया। मुहरों पर अनुष्ठान के दृश्य बने हैं, जो धार्मिक आस्थाओं और प्रथाओं के बारे में बताते हैं।

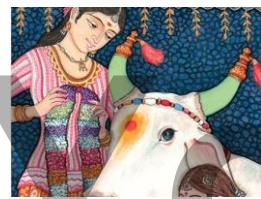
**3. वेदियां :-** कालीबंगा और लोथल से अनेक वेदियां मिली हैं, जो भी संभवतः धार्मिक महत्व की रही होगी।



**4. प्रकृति की पूजा :-** हड्ड्या के कुछ मुहरों पर पेड़ पौधे उत्कीर्णित हैं, मान्यतानुसार प्रकृति की पूजा के संकेत देते हैं।



**5. पशु-पूजा :-** मुहरों पर बनाए गए कुछ जानवर – जैसे कि एक सिंग वाला जानवर के साक्ष्य पाये गये हैं। जिसे आमतौर पर एकश्रृंगी कहा जाता है। यहां कूबड़ वाला बेल विशेष पूजनीय था। इससे हड्ड्या में पशु पूजा का संकेत मिलता है।



**6. आद्य शिव की पूजा :-** मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर एक आकृति योगी की मुद्रा में बैठी दिखाई गई है, जो जानवरों से घिरी है, इसे "आद्य शिव" अर्थात् हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक का आरंभिक रूप की संज्ञा दी गई है।

**7. ऋग्वेद में रुद्र नामक देवता:-** सबसे आरंभिक धार्मिक ग्रन्थ ऋग्वेद में रुद्र नामक एक देवता का उल्लेख मिलता है, जो बाद की पौराणिक परम्पराओं में शिव के लिए प्रयुक्त एक नाम है। लेकिन शिव के विपरीत रुद्र को ऋग्वेद में न तो पशुपति और न ही योगी के रूप में दिखाया गया है।

**8. लिंग पूजा:-** पत्थर की शंकाकार वस्तुओं को संभवतः लिंग के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

#### ► हड्ड्या सभ्यता के पतन के कारण:-

**1. बाढ़ :-** जॉन मार्शल, अर्नेस्ट मैके तथा एस. आर. राव आदि विद्वानों के अनुसार हड्ड्या सभ्यता का विनाश एकमात्र नदी की बाढ़ के कारण हुआ। जॉन मार्शल ने मोहनजोदड़ो से, मैके ने चन्हूदडो से तथा राव ने लोथल से बाढ़ से सभ्यता के विनाश के साक्ष्य प्राप्त किए हैं।



**2. जलवायु परिवर्तन :-** आर. एल.



स्टीन, ए. एन. घोष आदि विद्वानों

के अनुसार सभ्यता का विनाश जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ। ईटों को पकाने, मकानों के निर्माण के लिए जंगलों की कटाई की गई। परिणामस्वरूप पानी बरसना काफी कम हो गया। वर्षा की कमी से कृषि पैदावार घट गई।

**3. भारी जलप्लावन:-** भूतत्व

वैज्ञानिक एम. आर. साहनी का विचार है कि सैंधव नगरों का विनाश भारी जल प्लावन के कारण हुआ।



**4. नदियों द्वारा मार्ग परिवर्तन:-**

लैम्ब्रिक तथा माधोस्वरूप वत्स सिंधु एवं अन्य नदियों के मार्ग परिवर्तन की इस सभ्यता के विनाश का कारण मानते हैं।



वत्स के अनुसार हड्ड्या नगर का विनाश रावी नदी के मार्ग परिवर्तन के कारण हुआ।

डेल्स के अनुसार कालीबंगन का विनाश घग्गर तथा उसकी सहायक नदियों के मार्ग परिवर्तन के कारण हुआ।

**5. प्राकृतिक आपदाएँ :-** के. यू. आर. कैनेडी ने

मोहनजोदड़ो के नर कंकालों का परीक्षण करने के पश्चात् यह निष्कर्ष दिया है कि सैंधव निवासी मलेरिया महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं के शिकार हुए।



**6. आर्थिक दुर्व्यवस्था :-** सैंधव नगरों की समृद्धि का मुख्य

आधार उनका पश्चिमी एशिया में विशेषकर मेसोपोटामिया के साथ व्यापार था। यह व्यापार 1750 ईसा पूर्व के लगभग अचानक समाप्त हो गया इस कारण सैंधव सभ्यता का नगरीय स्वरूप भी समाप्त हो गया।



**7. बाह्य आक्रमण :-** गार्डन

चाइल्ड स्टुअर्ट पिंगट तथा

आर. एम. व्हीलर के

अनुसार हड्पा सभ्यता के

विनाश का कारण बाह्य आक्रमण था। व्हीलर ने सैंधव सभ्यता की अंतिम तिथि का समर्थन ऋग्वेद के साक्ष्य से किया है। इससे पता चलता है कि इंद्र ने रक्षा प्राचीरों से युक्त नगरों को ध्वस्त कर दिया। जिसके कारण उसे "पुरंदर" कहा गया। मोहनजोदड़ो की खुदाई से पता चलता है कि वहां के निवासियों की अत्यंत निर्दयता पूर्वक हत्या कर दी गई थी।

**8. भूकंप :-** एम. आर. साहनी, राइक्स, व डेल्स के अनुसार भूतात्त्विक परिवर्तन द्वारा हड्पा सभ्यता का विनाश हो गया।

**9. प्रशासनिक शिथिलता :-** कुछ विद्वानों का विचार है कि शासक का अपने अधिकारियों पर नियंत्रण नहीं रहा होगा। एक सुदृढ़ एकीकरण के अभाव में संभवतः हड्पा सभ्यता का अंत हो गया होगा।

**10. पारिस्थितिकी असंतुलन :-** फेयर सर्विस तथा रफीक मुगल के अनुसार पारिस्थितिकी असंतुलन के कारण हड्पा सभ्यता का विनाश हो गया। ऐसे साक्ष्य मिले हैं जिनके अनुसार लगभग 1800 ईसा पूर्व तक चोलिस्तान जैसे क्षेत्रों में अधिकांश विकसित हड्पा स्थलों को त्याग दिया गया था। इसके साथ गुजरात, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश की नयी बस्तियों में आबादी बढ़ने लगी थी। के कारण हुआ।

**शासक:-**

✓ हड्पाई सत्ता कुछ पुरातत्वविद यह मानते हैं कि हड्पाई क्षेत्रों में अनेक शासक थे। मोहनजोदड़ो, हड्पा आदि के अपने अलग-अलग राजा होते थे।



✓ कुछ पुरातत्वविदों का मानना है कि संपूर्ण हड्पा क्षेत्र एक ही राज्य था।

**पुरातात्त्विक उत्खनन:-**

- **15 जनवरी 1784** को विलियम जोंस ने कोलकाता में एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की।
- **1861** में भारत में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना हुई।
- ए कनिंघम को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का पहला डायरेक्टर जनरल नियुक्त किया गया।
- **1924** में जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का डायरेक्टर जनरल बनाया गया।
- **1944** में आई एम व्हीलर भारतीय पुरातात्त्विक सर्वेक्षण विभाग के डायरेक्टर जनरल बने।



## वस्तुनिष्ट प्रश्न:-

1. हड्ड्या सभ्यता किस युग की सभ्यता हैं ?

उत्तर:- कांस्य युग

2. हड्ड्या सभ्यता में बंदरगाह कौन था ?

उत्तर:- लोथल

3. सिन्धु सभ्यता में ताँबा कहाँ से प्राप्त हुआ ?

उत्तर:- राजस्थान

4. सिन्धु सभ्यता में विशाल अन्नागार कहाँ मिला हैं ?

उत्तर:- मोहनजोदड़ो

5. मोहनजोदड़ो में अनुमानित कुओं की संख्या थी ?

उत्तर:- लगभग 700

6. हड्ड्या सभ्यता की लिपि मुख्य विशेषता थी-

उत्तर:- यह दाई से बाई और लिखी जाती थी

7. हड्ड्या व मोहनजोदड़ो स्थित हैं-

उत्तर:- वर्तमान पाकिस्तान में

8. हड्ड्या सभ्यता के किन देशों के साथ व्यापारिक संबंध

थे-

उत्तर:- ईरान, इराक, मिस्र

9. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पहले डायरेक्टर जनरल थे

उत्तर:- कर्निंघम

10. हड्ड्या लिपि में चिन्हों की संख्या थी.

उत्तर:- 375-400

11. शिल्प उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र था:

उत्तर:- चन्दूदड़ो

12. हल से जूते खेत के साक्ष्य मिले हैं:

उत्तर:- कालीबंगन से

13. शंख से बनी वस्तुओं का प्रमुख केंद्र था-

उत्तर:- नागेश्वर

14. हड्ड्या सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण था

उत्तर:- जलवायु परिवर्तन , लगातार अकाल पड़ना ,

प्राकृतिक आपदाएँ

15. हड्ड्या व मोहनजोदड़ो स्थित हैं-

उत्तर:- वर्तमान पाकिस्तान में

16. सैन्धव निवासियों का प्रिय पशु निम्न में से कौन- सा था?

उत्तर:- सांड़

17. सिन्धुघाटी सभ्यता के स्थलों में सर्वप्रथम किस स्थल का उत्खनन हुआ था ?

उत्तर:- हड्ड्या

18. सिन्धु घाटी सभ्यता किसके समकालीन नहीं मानी जाती हैं?

उत्तर:- क्रिट की सभ्यता

19. भारतीय उपमहाद्वीप की पहली सभ्यता का विकास हुआ-

उत्तर:- सिन्धु के मैदान में

20. हड्ड्या का उत्खनन किया था-

उत्तर:- दयाराम सहनी ने

21. हड्ड्या सभ्यता किस युग की सभ्यता हैं?

उत्तर:- कांस्य युग

22. पहली बार हड्ड्या को किस वर्ष उत्खनित किया गया ?

उत्तर:- 1921

23. सिन्धु घाटी सभ्यता का कौन- सा स्थल 'सिन्ध का बाग' कहा जाता हैं ?

उत्तर:- मोहनजोदड़ो

24. सिन्धुघाटी सभ्यता की जुङवाँ राजधानी थी-

उत्तर:- हड्ड्या – मोहनजोदड़ो

25. हड्ड्या सभ्यता का सबसे बड़ा नगर कौन-सा था?

उत्तर:- मोहनजोदड़ो

26. राय बहादुर दयाराम साहनी ने कहाँ उत्खनन करवाया था ?

उत्तर:- हड्ड्या

27. मोहनजोदड़ो की खोज 1922 ई० में किसने की ?

उत्तर:- राखल दास बनर्जी

28. मोहनजोदड़ो किस भाषा का शब्द हैं ?

उत्तर:- सिन्धी

29. मोहनजोदड़ो किस नदी के किनारे स्थित हैं ?

उत्तर:- सिन्धु

30. कांस्य सभ्यता का सबसे बड़ा नगर कौन था ?

उत्तर:- मोहनजोदड़ो

31. हड्डपा टीले का उल्लेख सर्वप्रथम 1826 ई० में किसने किया ?

उत्तर:- चार्ल्स मैसन

32. सिन्धुधाटी सभ्यता में विशाल स्नानागार के अवशेष कहाँ मिले?

उत्तर:- मोहनजोदड़ो

33. सिन्धुसभ्यता में गोदीपाड़ा कहाँ से मिला हैं?

उत्तर:- लोथल

34. लोथल कहाँ स्थित हैं?

उत्तर:- गुजरात

35. कालीबंगा कहाँ स्थित हैं?

उत्तर:- राजस्थान में

36. कालीबंगा किस नदी के किनारे स्थित हैं ?

उत्तर:- सरस्वती

37. हड्डपा सभ्यता भारत के किस भाग में विकसित हुई थी ?

उत्तर:- पश्चिमोत्तर

38. पुरातत्व के अन्तर्गत निम्न में से कौन एक नहीं हैं?

उत्तर:- साहित्य

39. सैन्धव संस्कृति के अन्तर्गत अधिसंख्य मुहरें प्राप्त हुई हैं। निम्नांकित में से ये मुहरें किस चीज से निर्मित हैं ?

उत्तर:- सेलखड़ी

40. मनके के लिए कौन-सी बस्ती प्रसिद्ध थी ?

उत्तर:- चन्हुदड़ो

41. सिन्धु सभ्यता का कौन-सा स्थल 'मृतकों का टीला' के रूप में विख्यात है ?

उत्तर:- मोहनजोदड़ो

42. सिन्धु सभ्यता का बंदरगाह नगर कौन था ?

उत्तर:- लोथल

43. सिन्धु सभ्यता में नृत्य करती हुई लड़की की मूर्ति कहाँ से मिली हैं ?

उत्तर:- मोहनजोदड़ो

44. सिन्धु धाटी सभ्यता में हल का प्रमाण मिला हैं-

उत्तर:- कालीबंगा

45. हड्डपा सभ्यता का प्रशासन था-

उत्तर:- नगरपालिका जैसा

46. सिन्धु धाटी के निवासीयों को किस धातु का ज्ञान नहीं था ?

उत्तर:- लोहा

47. कोलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की-

उत्तर:- विलियम जोन्स

48. हड्डपा साभ्यता में प्राप्त अवतल चक्री पर किस पुराविद् में प्रकाश डाला हैं ?

उत्तर:- अर्नेस्ट मैके

49. निम्नलिखित हिन्दू देवताओं में से कौन सैन्धव सभ्यता के प्रमुख देवता थे ?

उत्तर:- शिव

50. सिन्धु सभ्यता का किस देश के साथ व्यापारिक संबंध नहीं था ?

उत्तर:- चीन

51. हड्डपा किस नदी के किनारे स्थित हैं ?

उत्तर:- राबी

52. मोहनजोदड़ो का उत्खनन किसने किया था ?

उत्तर:- आर. डी. बनर्जी

53. लोथल किस नदी के किनारे स्थित हैं?

उत्तर:- भोगवा

54. हड्डपा सभ्यता किस युग की सभ्यता है ?

उत्तर:- कांस्य युग

55. घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य कहाँ से मिले हैं?

उत्तर:- सुरकोतड़ा

लघु उत्तरीय प्रश्न:-

1. अभिलेख किसे कहते हैं? अभिलेखों का क्या महत्व है।

उत्तर:- पत्थर या धातु पर लिखे गए लेख को अभिलेख कहते हैं। अभिलेख से हमें प्राचीन इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

2. अभिलेखों के दो महत्व बताइए।

**उत्तर :-** अभिलेखों का दो महत्व निम्नलिखित हैः -

(i) अभिलेख से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है।

(ii) अभिलेख से शासक और उनके द्वारा किए गए कार्य की जानकारी मिलती है।

3. हड्पा कालीन सिंचाई के दो साधनों को बताएं।

**उत्तर:-** हड्पा कालीन सिंचाई के दो प्रमुख साधन नहर और जलाशय था। धोलावीरा से नहर और जलाशय का अवशेष मिलते हैं।

4. हड्पा के चार प्रमुख केंद्रों/नगरों का नाम बताएं।

**उत्तर:-** हड्पा सभ्यता के प्रमुख केंद्रों का नाम :-

- ✓ हड्पा
- ✓ मोहनजोद्हरा
- ✓ कालीबंगान
- ✓ लोथल

5. पुरातत्व से आप क्या समझते हैं?

**उत्तर:-** वह विज्ञान जिसके माध्यम से पृथ्वी के गर्भ में छिपी हुई सामग्री की खुदाई कर अतीत के लोगों के भौतिक जीवन का ज्ञान प्राप्त होता है, उसे पुरातत्व कहा जाता है।

6. कार्बन 14 विधि क्या है-

**उत्तर:-** तिथि निर्धारण की वैज्ञानिक विधि को कार्बन 14 विधि कहा जाता है। जिस पदार्थ में कार्बन को मात्रा जितनी कम होती है वह उतना ही प्राचीन माना जाता है।

7. उत्खनन से आप क्या समझते हैं।

**उत्तर:-** धरातल से खुदाई करके पुरातत्त्विक सामग्री प्राप्त करना उत्खनन कहलाता है।

8. हड्पा लिपि के बारे में आप क्या जानते हैं?

**उत्तर:-** हड्पाई लिपि रहस्यमय लिपि थी। इसे आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। इस लिपि में चिन्हों की संख्या 375 से 400 के बीच चिन्ह था।

9. सिंधु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख समकालीन सभ्यताओं के नाम लिखें।

**उत्तर:-** सिंधु घाटी सभ्यता के समकालीन सभ्यता के नाम:-

(i) मोसोपोटामिया की सभ्यता

(ii) ईरान की सभ्यता

10. हड्पा सभ्यता की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख करें।

**उत्तर:-** हड्पा सभ्यता की विशेषताएँ:-

(i) हड्पा सभ्यता सुनियोजित नगरीय सभ्यता थी।

(ii) हड्पा सभ्यता को जल निकासी प्रणाली सुनियोजित थी।

11. हिंदू घाटी सभ्यता में समूह के दाह संस्कार के कितने प्रकार थे?

**उत्तर:-** हड्पा सभ्यता में दाह संस्कार तीन प्रकार के थे:-

(i) पूर्ण समाधिकरण

(ii) आंशिक समाधीकरण

(iii) दाह कर्म

12. हड्पा सभ्यता के जल निकासी प्रणाली का दो विशेषता बताएं।

**उत्तर:-** हड्पा सभ्यता के जल निकासी प्रणाली की विशेषताएँ:-

○ हड्पा सभ्यता के हर घर में नाली होता था।

○ हर घर का नाली मुख्य सङ्क के दोनों ओर बनी पक्की नाली से जोड़ा जा सकता है।

13. विशाल अन्नागार पर टिप्पणी लिखें।

**उत्तर:-** हड्पा सभ्यता में अन्नागार का साक्ष्य मोहनजोद्हरो से मिला है। अन्नागार में अन्न जमा करके रखा जाता था।

अन्नागार में हवा जाने की व्यवस्था थी।

14. मोहनजोद्हरो के विशाल स्नानघर का वर्णन करें।

**उत्तर:-** हड्पा सभ्यता में स्नानघर का साक्ष्य मोहनजोद्हरो से मिला है। स्नानघर का उपयोग अनुष्ठानिक स्नान के लिए होता था। स्नानघर के चारों ओर कमरे और बरामदे थे। स्नानघर में कुआं था।

15. लोथल कहां है। इतिहास में इसका क्या महत्व है?

**उत्तर:-** लोथल गुजरात में भोगवा नदी के किनारे स्थित है। लोथल बंदरगाह नगर के रूप में प्रसिद्ध है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:-

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के विभिन्न स्रोतों का वर्णन करें।

**उत्तर:-** भारतीय इतिहास के अध्ययन के निम्नलिखित स्रोत हैं:-

- (i) साहित्यिक स्रोत
- (ii) पूरातात्त्विक स्रोत
- (iii) विदेशी यात्रियों का विवरण

(i) साहित्यिक स्रोत:- साहित्यिक स्रोत दो प्रकार के होते हैं धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य। धार्मिक साहित्य में धर्म से संबंधित ग्रंथ आते हैं जैसे महाभारत, रामायण, वेद, पुराण, उपनिषद, वेदांग आदि। लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथ तथा जीवनी आती है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कल्हण का राजतरंगिणी।

(ii) पुरातात्त्विक स्रोत:- भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए पुरातात्त्विक स्रोत सर्वाधिक प्रमाणिक हैं। इसमें अभिलेख, सिक्का, मूर्ति, चित्रकला, स्मारक, भवन आदि आते हैं।

(iii) विदेशी यात्रियों का विवरण:- विदेशी यात्रियों के यात्रा वृतांत से भी हमें भारतीय इतिहास के बारे में जानकारी मिलता है।

**जैसे:-** हेरोडोटस, मेगास्थनीज, अलबरूनी

2. हड्डपा सभ्यता के विस्तार का विवेचना करें।

**उत्तर:-** हड्डपा सभ्यता का क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किलोमीटर था। यह पूर्व से पश्चिम तक 1600 किलोमीटर एवं उत्तर से दक्षिण तक 1100 किलोमीटर में फैला हुआ था। यह उत्तर में 'मांडा' (जम्मू कश्मीर) तक, दक्षिण में 'दैमाबाद' (महाराष्ट्र) तक, पूर्व में 'आलमगीरपुर' (उत्तरप्रदेश) तक और पश्चिम में 'सुल्कांगेंडोर' (पाकिस्तान) तक फैली हुई थी। हड्डपा सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार था।

3. हड्डपा सभ्यता के नगर निर्माण की प्रमुख विशेषताओं/नगर नियोजन प्रणाली का वर्णन करें।

**उत्तर:-** हड्डपा सभ्यता के नगर निर्माण की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

(i) हड्डपा की सड़कें समकोण पर काटती थीं और इस प्रकार से नगर योजना एक ग्रिड प्रारूप अर्थात् जाल पद्धति पर आधारित थी।

(ii) सिंधु घाटी सभ्यता में जल निकासी प्रणाली भी अपना विशेष महत्व रखती है। यहां नियोजित जल निकासी प्रणाली थी। इस दौरान शहर में नालियों का जाल बिछा हुआ था।

(iii) यहां भवन निर्माण के लिए पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था। सिंधु घाटी सभ्यता कालीन प्रत्येक घर में एक रसोई घर और एक स्नानागार होता था।

(iv) नगर को दो हिस्सों में विभाजित किया जाता था। एक 'पश्चिमी टीला' होता था, जिसे 'दुर्ग' कहते थे, जबकि दूसरा हिस्सा 'पूर्वी टीला' होता था, जिसे 'निचला नगर' कहते थे।

4. हड्डपा सभ्यता के धार्मिक और सामाजिक स्थिति की विवेचना करें।

**उत्तर:-** हड्डपा सभ्यता का धार्मिक स्थिति :-

- हड्डपा के लोग मातृदेवी की पूजा करते थे।
- हड्डपा के लोग प्रकृति की पूजा करते थे।
- हड्डपा के लोग एक सिंह वाला जानवर और कूबड़ वाला बैल का पूजा करते थे।
- हड्डपा सभ्यता के लोग आध शिव का पूजा करते हैं।
- हड्डपा के लोग लिंग के पूजा करते थे।

**हड्डपा सभ्यता का सामाजिक जीवन :-**

- हड्डपा सभ्यता नगरीय सभ्यता था।
- हड्डपा सभ्यता मातृसत्तात्मक सभ्यता था।
- हड्डपा के लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों भोजन करते थे।
- हड्डपा सभ्यता के लोग आभूषण के शौकीन थे।
- हड्डपा सभ्यता के लोग मिट्टी एवं धातु के तरह-तरह के बर्तन का प्रयोग करते थे।

5. हड्डपा सभ्यता के आर्थिक जीवन की विवेचना करें।

**उत्तर :-** हड्डपा सभ्यता के आर्थिक जीवन की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित थी :-

- हड्ड्या सभ्यता के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। गेहूँ, जौ, कपास, मटर तथा तिल आदि की खेती मुख्यतया होती थी।
- यहां पशुपालन का भी प्रचलन था। गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि प्रमुख रूप से पाले जाते थे।
- यहाँ धातुओं के सुन्दर आभूषण बनाये जाते थे तथा सीप, शंख, हाथी दाँत आदि के भी आभूषण बनाये जाते थे।
- हड्ड्या सभ्यता में विदेशी व्यापार भी होता था, जो थल तथा जल दोनों मार्गों से होता था।

### 6. हड्ड्या सभ्यता के पतन के प्रमुख कारणों का उल्लेख किजिए।

**उत्तर:-** हड्ड्या सभ्यता के पतन के कारण:-

- i. **बाढ़ :-** कुछ विद्वानों के अनुसार हड्ड्या सभ्यता का विनाश एकमात्र नदी की बाढ़ के कारण हुआ।
- ii. **जलवायु परिवर्तन :-** कुछ आदि विद्वानों के अनुसार सभ्यता का विनाश जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ। ईंटों को पकाने, मकानों के निर्माण के लिए जंगलों की कटाई की गई। परिणामस्वरूप पानी बरसना काफी कम हो गया। वर्षा की कमी से कृषि पैदावार घट गई।
- iii. **भारी जलप्लावन:-** कुछ विद्वानों का विचार है कि सैंधव नगरों का विनाश भारी जल प्लावन के कारण हुआ।
- iv. **नदियों द्वारा मार्ग परिवर्तन:-** कुछ विद्वानों नदियों के मार्ग परिवर्तन को इस सभ्यता के विनाश का कारण मानते हैं।
- v. **प्राकृतिक आपदाएं :-** के. यू. आर. कैनेडी ने मोहनजोदड़ो के नर कंकालों का परीक्षण करने के पश्चात यह निष्कर्ष दिया है कि सैंधव निवासी मलेरिया महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं के शिकार हुए।
- vi. **आर्थिक दुर्व्यवस्था :-** सैंधव नगरों की समृद्धि का मुख्य आधार उनका पश्चिमी एशिया में विशेषकर मेसोपोटामिया के साथ व्यापार था। यह व्यापार 1750 ईसा पूर्व के लगभग अचानक समाप्त हो गया इस कारण सैंधव सभ्यता का नगरीय स्वरूप भी समाप्त हो गया।

vii. **बाह्य आक्रमण:-** कुछ विद्वानों के अनुसार हड्ड्या सभ्यता के विनाश का कारण बाह्य आक्रमण था। व्हीलर ने सैंधव सभ्यता की अंतिम तिथि का समर्थन ऋग्वेद के साक्ष्य से किया है। इससे पता चलता है कि इंद्र ने रक्षा प्राचीरों से युक्त नगरों को ध्वस्त कर दिया। जिसके कारण उसे "पुरंदर" कहा गया।

viii. **भूकंप :-** एम. आर. साहनी, राइक्स, व डेल्स के अनुसार भूतात्त्विक परिवर्तन द्वारा हड्ड्या सभ्यता का विनाश हो गया।

ix. **प्रशासनिक शिथिलता:-** कुछ विद्वानों का विचार है कि शासक का अपने अधिकारियों पर नियंत्रण नहीं रहा होगा। एक सुदृढ़ एकीकरण के अभाव में संभवतः हड्ड्या सभ्यता का अंत हो गया होगा।

x. **पारिस्थितिकी असंतुलन:-** फेयर सर्विस तथा रफीक मुगल के अनुसार पारिस्थितिकी असंतुलन के कारण हड्ड्या सभ्यता का विनाश हो गया। थी।